सं श्रो वि |हिसार | 120-86 | 34263. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये कि है मैं हरियाणा कृषि विशव-विद्यालय, हिसार, के श्रमिक श्री नर्रास्ट, पुत्र श्री जय नारायण, मार्फत मजदूर एकता यूनियन, नागोरी गेंट, हिसार, तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीकोणिक विवाद है;

श्रीर चुकि हरियाणा के राख्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 9641-1-श्रम/78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवाद- ग्रस्त या उससे सुमंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते है जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित है:—

क्या श्री नर्रासह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं० श्रो० वि०/हिसार/70-86/34269.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल कि राय है कि मैं (1) परिवहन भायुक्त, हिरयाणा, चण्डीगढ़, (2) राज्य परिवहन, हिसार, के श्रमिक श्री किल राम कैण्टीन हैल्पर, पुत्र श्री बस्ती राम, गांव ब डा० नंगयला जिला हिसार, तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इस में इस के बाद लिखित मामले में कीई श्रौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, भोद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देनें हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उनत अबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या उनत विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री रूलि राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हुकदार है ?

दिनांक 18 सितम्बर, 1986

्संव श्रो० वि०/एफ़०डी०/65-86/34541.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० एलाईड इन्जिनियरींग, 'प्लाट नं० 5,केंक्पर 6, फ़रीदाबाद, के श्रीमिक श्री सुरेन्द्र यादव, पुत्र श्री रामलक्ष यादव मार्फत फरीदाबाद इजिनियरिंग यूनियन, जी-162, इन्द्रा क्रेगरं, भैक्टर 7, फ़रीदाबाद, तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ेग्रीर चूंकि इंदियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसिलए, इस्त, श्रीचोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई कि नियम करते कुछ, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की श्रारा 7 के ग्रिधीन गठित धम न्यायालय, फरीदाबाद, की विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत भयवा संबंधित मामला है :---

क्या श्री सुरेन्द्र यादव की सेवाओं का-सभामन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं भो वि०/पानी/83-86/34548.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै काहन उद्योग, ई-33 उद्योगिक क्षेत्र, पानीपत, के श्रमिक श्री ईश्वर चन्द, पुत्र वलदेव राज गांवग्रतोलापूर, डा० कनेड़ा, जिला करनाल, तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, भन, भौद्योगिक विवाद भिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई ' शंक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी भिधिस्चना सं० 3(44)84—3—श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त श्रिष्ठिनियम की धारा 7 के भधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रग्वालां, को विवाद ग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यामनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अभवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री ईश्वर चन्द की सेवाग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?